पीटर और मेरा नोबल प्राइज

डॉ. सुभाष शर्मा

कई महीनों से पीटर की एक विशिष्ट आदत को बड़े गौर से देख रहा था। वह जब भी कोई परिचित चेहरा देखता अपनी दुम को दाँयें–बाँयें बड़ी तेजी से हिलाने लगता। मेरे खोजी दिमाग ने मुझे आज्ञा दी कि देखो यह गिरते सेब की भांति तुम्हें भी न्यूटन की श्रेणी में ला खड़ा कर सकता है। मैं हरकत में आ गया। मैने सोचा – हो ना हो कुत्ते का याद्दाश्त केन्द्र दुम में होता होगा। वर्ना हर किसी को देखकर वह दुम क्यों नहीं हिलाता? सिर्फ जिसकी पहचान उसकी मेमोरी में स्टोर हो चुकी है उसी को देखकर हिलाता है। जैसे–जैसे मैं इस पर विचार करता मेरा विश्वास और दृढ़ होता जाता। मैं उत्साहित था कि कितनी महान खोज होगी यह। इसके आधार पर आगे यह सि) किया जा सकेगा कि वे प्राणी जिन्हें खुदा ने पूँछ से नहीं नवाज़ा उनका मेमोरी सेंटर द्धयाददाश्त केन्द्रऋ भी दिमाग में न होकर कहीं और होता होगा। मैं नोबल प्राइज़ के सपने में खो गया। प्राइज़ मनी को कैसे इस्तेमाल करूँगा यह सब योजना बना चुका था। बचा था यह सि) करना कि कुत्ते की दुम के किस हिस्से में यह मेमोरी सेंटर होता है ।

मैं अपना शोध यहाँ आपकी जानकारी के लिये दे रहा हूँ। लेकिन कृपया यह जानकारी किसी वैज्ञानिक को ना बतायें। वर्ना मेरा शोध चुराकर वो अपने नाम से छापकर नोबल पुरस्कार प्राप्त कर लेगा और मैं ताकता रह जाऊँगा।

शोध पत्र

विषय : कुत्ते का मेमोरी सेटंर दुम के किस भाग में।

सामग्री : 45 कुत्ते और एक अद्द कैंची।

स्टेज 1) : 45 में से 22 कुत्तों की पूंछ मेरी असिस्टेंट द्वारा मध्य से काट दी गयी। किसी कुत्ते को नहीं पता था कि उसकी दुम कहाँ से और कितनी कटी है और कटी भी है या नहीं। मुझे भी नहीं पता था। इसे दोहरी अंधा प्रयोग या डबल ब्लाईड ट्रायल कहते हैं।

घाव भरने के लिए 3 से 8 दिन बाद प्रत्येक कुत्ते के सामने एक परिचित और एक अपरिचित आदमी लाया गया। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि सभी 45 कुत्ते द्धदुम कटे तथा बिना दुमकेऋ परिचित चेहरा देखकर एक समान दुम हिला रहे थे। इस से यह निश्चर्य तो निकल ही गया कि कुत्ते का मेमोरी सेंटर सिरे से मध्य तक तो नहीं है।

स्टेज 2) : इस स्टेज में जिन 22 कुत्तों की दुम आधी काटी थी उसी की शेष आधी को आधी और काट दी। सारी प्रक्रिया दोहराने पर दुम का हिलना और स्थिर रहना सभी 45 कुत्तों में समान था ।

स्टेज 3) : यहाँ हमने उन्हीं 22 कुत्तों की दुम जड़ से काट दी। वही प्रक्रिया दोहराने पर मैने जो नतीजा पाया मैं तो जमीन से उछल पड़ा। मारे खुशी के मेरी आवाज नहीं निकल रही थी। जिन कुत्तों की दुम जड़ से काट दी गयी थी, वह अब नहीं हिल रही थी । परिचित अपरिचित किसी को भी देख कर नहीं। साबुत दुम वाले कुत्ते अभी भी दुम हिलाकर मेरा अभिवादन कर रहे थे। मैं इस निष्कर्श पर पहुँच गया कि कुत्ते का मेमोरी सेंटर उसकी दुम के जड़ में होता है। मंजिल अभी दूर है। अब मुझे यह सि) करना है कि बिना दुम के जानवर की मेमोरी सेंटर कहाँ होती है ?

उसके कुछ खास स्वभाव की मैं स्टडी कर रहा हूँ। परिचित का अच्छा काम देखकर टाँग अड़ाना। परिचित की हर कामयाबी पर उसकी टाँग खींचना ।

अपने अगले शोध में मै य ह सिद्ध करने में लगा हूँ कि बिना दुम के जानवरों का मेमोरी सेंटर उसके पैर में कहीं होता है। शायद पैर के ठीक बीच में।

इस पर मैं प्रयोग करने जा रहा हूँ। मुझे 45 बिना दुम के जानवरों की तलाश है जो अपनी टाँग कटवाने के लिए तैयार हों। इस से उन्हें लाभ यह होगा कि कोई उनकी टाँग नहीं खीच पायेगा और मेरा शोध पूरा हो जायेगा।अपनी प्रस्तावना में मैं उन सभी प्रतिभागियों के नाम पते छापने की ग्यारेंटी लेता हूँ।

मुझे सबसे ज़्यादा उम्मीद है उन मधुमेह ग्रस्त पूँछ विहीन प्राणियों से जो हर तरह की ऊटपटांग सलाह का अक्षरश : पालन कर अपने आप को बली का द्धबकराऋ चूहा द्धगिनी पिगऋ बनवाते रहते हैं और बाद में अपनी टाँग नहीं तो कोई और महत्वपूर्ण अंग को होम करवा लेते हैं।

●●●